मालवा-निमाड़

मूल्य 10.00 रुपए

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

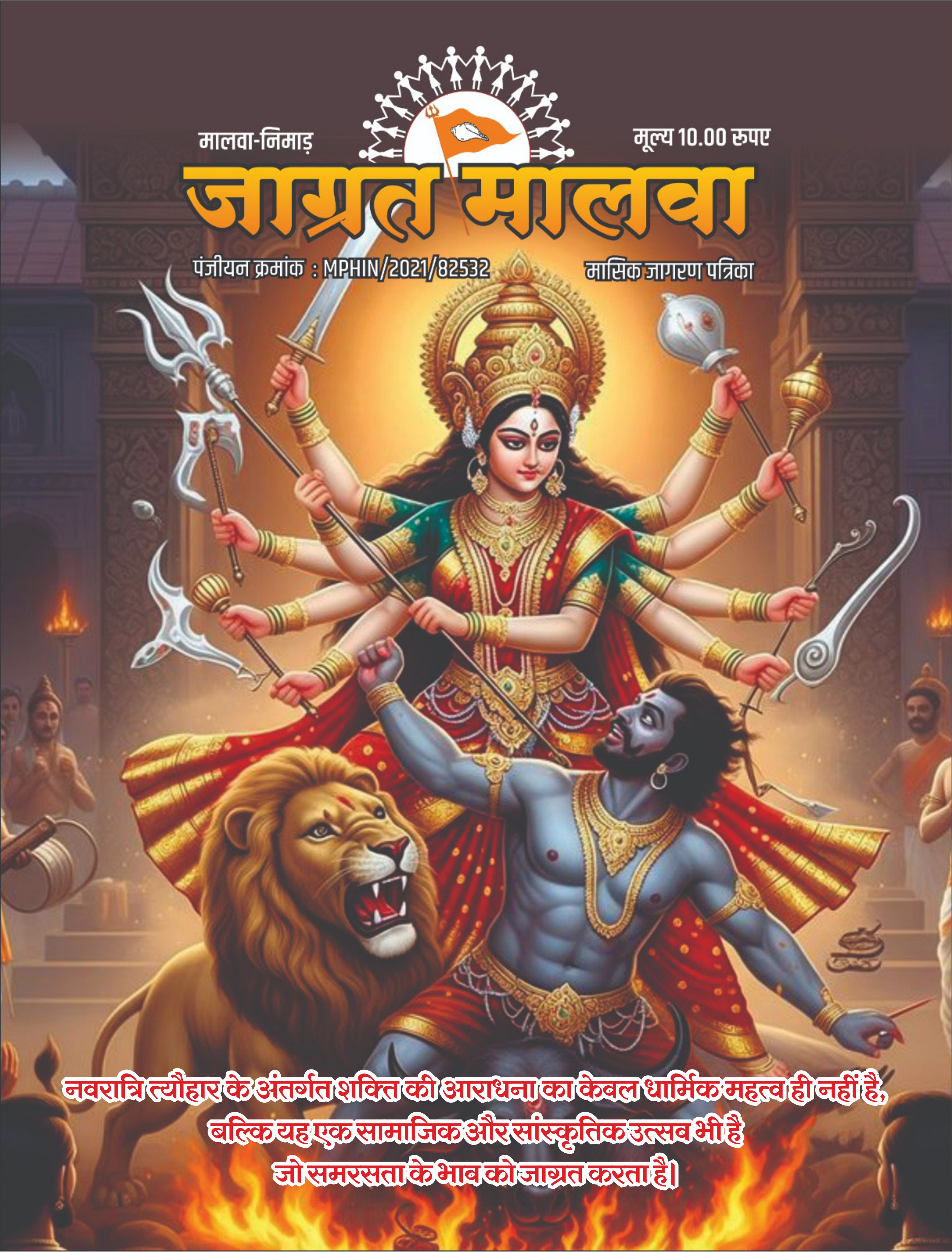

नवरात्रि त्यौहार के अंतर्गत शक्ति की आराधना का केवल धार्मिक महत्व ही नहीं है,
बल्कि यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव भी है
जो समरसता के भाव को जाग्रत करता है।

SHAKTI®
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल–दर–साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख–रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण–अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

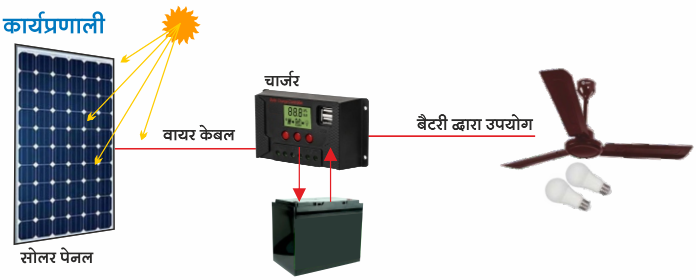

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर – 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला–धार (म.प्र.) – इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई–मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : ०५ अंक : ०४

प्रदोष व्रत १३
युगाब्द ५१२७

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
राकेश दाँगी
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
राजेश सोनी
अशोक वर्मा
योगेश भोपे
सौरभ मारु
अमन व्यास

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक राकेश दाँगी
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

अपनी भारतीय संस्कृति में **"नारी को नारायणी"** कहा गया है। हिन्दू समाज में आज भी नारी को कन्या, माता और गृहिणी के रूप में पूजा जाता है। नारी माँ है, बहिन है, पुत्री है, नारी सदैव पूजनीय है। नारी सबला है, अबला नहीं। वह शक्ति स्वरूपा है। वह शक्ति का प्रतीक है। वह ज्ञान और समृद्धि का भी प्रतीक है। ज्ञान की देवी माँ सरस्वती और धन की देवी माँ लक्ष्मी तथा शक्ति की देवी माँ नवदुर्गा के रूप में नारी शक्ति की ही पूरा हिन्दू समाज पूजा-अर्चना करता है।

नारी ही माँ के रूप में मानव की प्रथम गुरू और मार्गदर्शक होती है। नारी से ही इस सृष्टि का निर्माण होता है। माँ ही परिवार की धुरी होती है। वह दो कुलों को जोड़ने वाली प्रमुख कड़ी होती है।

नारी श्रद्धा, प्रेम, भक्ति, सेवा, समानता, समरसता, त्याग, बलिदान, समर्पण, समन्वय तथा ममता की साक्षात् मूर्ति है। माँ साक्षात् ईश्वर का स्वरूप होती है। **मातृदेवो भव** कहकर माँ को नमन किया जाता है। नवरात्रि पर्व में जो मातृशक्ति की साधना, उपासना और आराधना हम करते हैं वह अपनी संतान के प्रति स्नेह, समर्पण, त्याग एवं तपस्या का ही परिणाम है। माँ केवल जन्म देने वाली ही नहीं होती बल्कि वे तमाम तत्व भी आते हैं जो माँ की तरह हमारा पालन-पोषण व संरक्षण करते हों, जैसे धरती माता। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने सोने की लंका पर विजय प्राप्त करके कहा था कि इस सोने की लंका की तुलना में अपनी जन्मभूमि किसी स्वर्ग से कम नहीं है। हम श्रीराम के अनुयायी होकर अपनी जन्मभूमि धरती माता के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव रखकर सदैव इसकी रक्षा के लिये तैयार रहें। इस भाव के साथ

तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ मातृभूमि, तुझे अभी कुछ और भी दूँ।।

- देवकृष्ण व्यास

दुर्गा पूजा : आदि शक्ति की आराधना

अरुंधती सिंह चंदेल

भारतीय संस्कृति में देवी दुर्गा केवल एक प्रतिमा नहीं, बल्कि आदि शक्ति का मूर्त रूप हैं। वे सृष्टि की जननी हैं, संहार और सृजन दोनों की संचालिका हैं। जब-जब अधर्म का अंधकार संसार को ढक लेता है, तब-तब वही माँ अपने विराट रूप में अवतरित होकर दुष्टों का संहार और धर्म की रक्षा करती हैं। जैसे ही अश्विन मास का आगमन होता है, गाँव में दुर्गा पूजा की चर्चा शुरू हो जाती है। कारीगर मिट्टी खोदकर लाते हैं और देवी की प्रतिमा बनाने में जुट जाते हैं। बाँस, पुआल और कपड़े से पंडाल बनाए जाते हैं। गाँव की औरतें अपने घर-आँगन को गोबर से लीपती हैं, रंग-बिरंगी अल्पनाएँ सजाती हैं और नवरात्र के पहले दिन कलश स्थापना करती हैं। बच्चे पंडाल की सजावट में भाग लेते हैं, झंडियाँ और कागज की लड़ियाँ लगाते हैं। जिस दिन प्रतिमा पंडाल में विराजती है, उस दिन पूरे गाँव में मेले जैसा उत्सव होता है। ढोल-नगाड़े बजते हैं, शंख और घंटियों की ध्वनि से वातावरण गूँज उठता है। लोग नए कपड़े पहनकर माँ के दर्शन करने आते हैं। यह दृश्य गाँव में धार्मिकता के साथ-साथ सामाजिक मेल-जोल का भी प्रतीक है। नवरात्र के नौ दिनों तक गाँव में पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन और कथा-वार्ता का क्रम चलता है। चौपाल पर रात-भर कीर्तन मंडली बैठती है - कोई ढोलक बजाता है, कोई झांझ, और महिलाएँ **जय अम्बे गौरी** गाकर माँ का गुणगान करती हैं। खेत-खलिहान का काम करके लोग शाम को पंडाल में जमा हो जाते हैं। बच्चे झाँकियों का आनंद लेते हैं और बुजुर्ग अपनी पुरानी कहानियाँ सुनाते हैं। गाँव में दुर्गा पूजा सिर्फ पूजा तक सीमित नहीं रहती, यह सामाजिक एकता और भाईचारे का भी पर्व है। हर घर से लोग चंदा देते हैं, मिल-जुलकर व्यवस्था करते हैं और मिलकर भोग और प्रसाद बनाते हैं। चाहे अमीर हो या गरीब, सब माँ की आरती में एक साथ खड़े होकर **जय माँ दुर्गा** का उद्घोष करते हैं।

महिषासुर का वध केवल एक कथा नहीं, बल्कि यह अनंत संघर्ष का प्रतीक है – जहाँ एक ओर अहंकार, वासना और अन्याय है, वहीं दूसरी ओर सत्य, साहस और करुणा का तेज है। माँ दुर्गा का त्रिनेत्री स्वरूप हमें बताता है कि वे भूत, वर्तमान और भविष्य की सर्वज्ञा हैं। उनके दसों हाथ केवल अस्त्र-शस्त्र नहीं, बल्कि यह संदेश हैं कि मानव जीवन के हर क्षेत्र में शक्ति, विवेक और संयम आवश्यक है। नवरात्र केवल उत्सव नहीं है, यह आध्यात्मिक यात्रा है। प्रथम दिवस पर माँ शैलपुत्री आत्मशक्ति की पहचान कराती हैं। द्वितीया पर माँ ब्रह्मचारिणी साधना और तप की ओर प्रेरित करती हैं। तृतीया पर माँ चंद्रघंटा हमें संतुलन और शांति देती हैं। चतुर्थी पर माँ कूष्मांडा सृष्टि की आद्य ऊर्जा का स्मरण कराती हैं। पंचमी पर माँ स्कंदमाता मातृत्व और करुणा का आशीष देती हैं। षष्ठी पर माँ कात्यायनी साहस और वीरता का प्रतीक हैं। सप्तमी पर माँ कालरात्रि हमें निर्भयता और विनाशकारी शक्ति का बोध कराती हैं। अष्टमी पर माँ महागौरी पवित्रता और निर्मलता का वरदान देती हैं। नवमी पर माँ सिद्धिदात्री पूर्णता और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती हैं। ये नौ रूप हमें यह सिखाते हैं कि मनुष्य का जीवन केवल भोग और भय का नाम नहीं, बल्कि आत्म-सिद्धि की साधना है। ग्राम्य जीवन में दुर्गा पूजा का उत्सव केवल भक्ति का आयोजन नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु, सृजन और संहार की गूढ़ चेतना का स्मरण है। जब ढोल-नगाड़ों की गूँज होती है और शंखनाद के साथ माँ का आवाहन होता है, तो ऐसा लगता है जैसे स्वयं आदिशक्ति आकाश और पृथ्वी के बीच प्रकट होकर कह रही हों - **हे मनुष्य! अपनी आत्मा में छिपी शक्ति को पहचानो, अधर्म के विरुद्ध खड़े हो, और धर्म की ज्योति प्रज्वलित करो।**

नवरात्र का हर दिन साधना है। पहला दिन आत्मशुद्धि का, दूसरा दिन मनोबल का, तीसरा दिन ज्ञान का, चौथा दिन धैर्य का, पाँचवाँ दिन करुणा का, छठा दिन वीरता का, सातवाँ दिन भक्ति का, आठवाँ दिन समर्पण का और नवाँ दिन पूर्णता का। यह नौ दिन वास्तव में मानव आत्मा की यात्रा हैं, जो अंत में विजयादशमी पर प्रकाश की ओर ले जाती है। माँ दुर्गा की पूजा हमें यह अनुभव कराती है कि शक्ति बाहर नहीं, भीतर है। जिस दिन मनुष्य अपने भीतर के भय और अज्ञान का संहार कर लेता है, उसी दिन वह सच्चे अर्थों में दुर्गा का अंश बन जाता है। अघोर परंपरा में दुर्गा को केवल सुंदर मातृरूप में नहीं देखा जाता, बल्कि उनके भैरवी और संहारक स्वरूप की भी आराधना होती है। अघोरी साधक मानते हैं कि दुर्गा केवल बाहरी मूर्ति नहीं, बल्कि हमारे भीतर स्थित कुण्डलिनी शक्ति का रूप हैं। जब साधक अपने भय, वासना और मोह का संहार करता है, तभी वह माँ के अघोर आशीष का अधिकारी बनता है। अंततः, दुर्गा पूजा हमें यह स्मरण कराती है कि जीवन केवल भोग नहीं, बल्कि साधना है। बुराई चाहे कितनी भी गहरी क्यों न हो, जब माँ की शक्ति का आशीष मिलता है तो सत्य का दीप बुझ नहीं सकता। माँ दुर्गा से यही प्रार्थना है कि वे हमें अपने अघोर स्वरूप का आशीर्वाद दें ताकि हम निर्भय होकर धर्म, न्याय और करुणा के मार्ग पर चल सकें।

दक्ष प्रजापति के यज्ञ से जुड़ी है माँ राजराजेश्वरी की कथा

भरत चतुर्वेदी, शाजापुर

हजारों वर्ष प्राचीन मंदिर को 52वां शक्तिपीठ बताकर शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंदजी ने की थी त्रिपुर सुंदरी की स्थापना

स्कंद पुराण में कथा है कि दक्ष प्रजापति द्वारा आयोजित यज्ञ में महादेव को आमंत्रित नहीं करने से रुष्ट होकर यज्ञ में पहुंची माता सती ने महादेव का अपमान होते देख यज्ञ कुंड में प्रवेश कर लिया था। बाद में पहुँचे महादेव को वीरभद्र ने माता सती की देह यज्ञकुंड से निकालकर दी थी। इस देह को लेकर निकले महादेव के क्रोध को कम करने के लिए भगवान विष्णु ने माता सती के अंग को भंग कर दिया था। माता की देह के अंग जहाँ-जहाँ भी गिरे वहाँ-वहाँ शक्तिपीठ के रूप में माता की आराधना होती है। ऐसे ही माता का दाहिना चरण यहाँ पर गिरा था, इस चरण का निशान अभी-भी यहाँ है जिसका पूजन किया जाता है। हजारों वर्ष प्राचीन माँ राजराजेश्वरी के मंदिर में दर्शनार्थ पहुंचे शंकराचार्य स्व. स्वरूपानंदजी ने मंदिर की स्थिति को देखने के पश्चात् स्कंद पुराण में उल्लेखित शक्तिपीठ के आधार पर इसे 52वां गुप्त शक्तिपीठ बताते हुए यहां पर माँ त्रिपुरसुंदरी की स्थापना की थी।

शहरी हाइवे के समीप स्थित माँ राजराजेश्वरी मंदिर के पुजारी पं. आशीष नागर ने बताया कि माता का मंदिर अद्भुत चमत्कारी है। पं. नागर ने बताया कि उनके दादाजी मंदिर के पुजारी स्व. पं. हरिशंकर नागर ने बताया कि वर्ष 1982 से लेकर 1992 के बीच माँ राजराजेश्वरी के दरबार में देश के चारों पीठ के शंकराचार्यों ने दर्शन करने के बाद इसे 52वां गुप्त शक्तिपीठ बताया था। वर्ष 1991 में यहां पहुँचे शंकराचार्य स्वरूपानंदजी ने स्कंद पुराण के अनुसार मंदिर की स्थिति को देखते हुए इसे शक्तिपीठ कहा था। मंदिर के पीछे से निकली चीलर नदी मंदिर के ठीक पीछे चंद्राकार (चंद्रभागा) है। ऐसा स्थान कोणार्क के बाद शाजापुर में ही है। वहीं यहाँ पर माता के दाहिने चरण का निशान है। इसके चलते यहां पर 10 दिन रुककर शंकराचार्य स्वरूपानंदजी ने माँ राजराजेश्वरी के मंदिर के समीप माँ त्रिपुर सुंदरी की स्थापना की थी। साथ ही माँ राजराजेश्वरी के मंदिर में छत पर बने हुए श्रीयंत्र को माता के समक्ष स्थापित किया था।

राजा भोज के कार्यकाल में हुआ था मंदिर का जीर्णोद्धार - मंदिर के पुजारी पं. नागर ने बताया कि माँ राजेश्वरी मंदिर का जीर्णोद्धार राजाभोज के कार्यकाल में सन 1060 में हुआ था। वहीं मंदिर के आगे सभा मंडप का निर्माण सन् 1734 में हुआ था। पं. नागर ने बताया कि पूर्व में माता के गर्भगृह के ठीक बाहर के स्थान पर शनिदेव मानकर पूजन किया जाता था। 1968 में उनके दादाजी पं. हरिशंकर नागर को स्वप्न आया था कि यहाँ शिव परिवार की प्रतिमा है जिसे बाहर निकाला जाए। सुबह जब पं. हरिशंकर नागर मंदिर में आरती करके निकले तो देखा कि जहाँ शनिदेव मानकर पूजन किया जाता था वहाँ पर एक चूहा बिल बनाकर बाहर निकला। जब बिल के अंदर झाँककर देखा तो वहाँ पर महादेव की प्रतिमा दिखाई दी। इसके चलते यहाँ खुदाई करवाने पर माता सती को उठाए हुए महादेव की प्रतिमा के साथ संपूर्ण शिव परिवार और त्रिशूल, चिमटा आदि निकला था। जिसकी यहां पर विधिवत स्थापना की गई।

तत्कालीन सिविल सर्जन और स्टॉफ ने करवाई थी सिंह प्रतिमा की स्थापना - पं. आशीष नागर ने बताया कि माता के गर्भगृह के बाहर सभा मंडप में माता की प्रतिमा के ठीक सामने हवन कुंड था। वर्ष 1970 में उनके दादाजी पं. हरिशंकर नागर मंदिर में पूजन कर रहे थे तभी हवनकुंड के स्थान पर सिंह आकर बैठा दिखाई दिया था। कुछ देर बाद सिंह यहाँ से निकलकर मंदिर के समीप स्थित आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग से अपने स्टॉफ के साथ गुजर रहे तत्कालीन सिविल सर्जन के चार पहिया वाहन के सामने आकर खड़ा हो गया था। ऐसे में तत्कालीन सिविल सर्जन सहित समस्त स्टॉफ ने माता की आराधना की तब सिंह यहाँ से चला गया। इसके बाद सिविल सर्जन और पूरे स्टॉफ ने एक-एक माह का वेतन देकर मंदिर के हवन कुंड के स्थान पर सिंह प्रतिमा की स्थापना कराई थी।

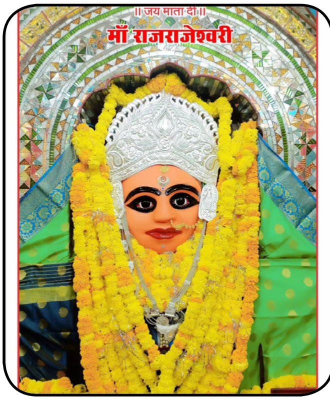

भक्तों की आस्था का प्रमुख स्थान, माता पूरी करती है मनोकामना - मंदिर पुजारी पं. नागर ने बताया कि रोढवाल ब्राह्मण समाज माँ राजराजेश्वरी का कुलदेवी के रूप में पूजन करता है। इसलिए माता राजराजेश्वरी को रोढ़ेश्वरी माता भी कहा जाता है। माँ राजराजेश्वरी के मंदिर में देश-विदेश से भक्त दर्शन के लिए पहुंचते हैं। विशेष बात यह है कि पूर्ण श्रद्धा के साथ माँ से माँगी हुई प्रत्येक मनोकामना को माता पूर्ण करती है। वैसे तो पूरे वर्ष यहाँ माता के भक्त दर्शन और पूजन के लिए पहुँचते हैं, लेकिन चैत्र नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि में यहाँ हजारों भक्त माता के दर्शन के लिए पहुँचते हैं।

स्वयंभू माता मंदिर हमारी आस्था व श्रद्धा का केंद्र

निलेश कटारा(माध्यमिक शिक्षक)

ऊँची पहाड़ी पर स्थित है एक प्राचीन मंदिर जो स्वयंभू नाम से प्रसिद्ध है। यह ग्राम देवीगढ़, तहसील मेघनगर, जिला झाबुआ में स्थित है। मान्यता है पहाड़ी पर स्थित प्राचीन माता जी स्वयं भूमि से प्रकट हुई थी। मेले में अंचल सहित सीमावर्ती राजस्थान व गुजरात से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शनार्थ पहुंचते हैं। भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का झाबुआ अंचल का यह सबसे बड़ा मेला है जो चैत्र पूर्णिमा पर लगता है। यह आठ दिन तक चलता है। इस दौरान लाखों श्रद्धालु यहाँ स्वयंभू माता के दर्शन करने आते हैं। यहाँ पर यातायात और सुरक्षा प्रबंधन, पेयजल और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, साथ ही स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मेले का यह दिव्य आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों, विविधता और सहिष्णुता की अद्वितीय मिसाल भी पेश करता है। शेर की गुफाएँ मंदिर के समीप स्थित प्राचीन पहाड़ी पर हैं। मेले के दौरान श्रद्धालु माताजी की सवारी शेर की इन गुफाओं को देखने श्रद्धापूर्वक पहाड़ी पर चढ़ाई करते हैं, जिसके नीचे स्वयंभू माता व गुफेश्वर महादेव मंदिर स्थित है।

माता का मेला पौराणिक और ऐतिहासिक संदर्भ - माता का मेला भारतीय संस्कृति का ऐसा पवित्र उत्सव है, जिसका इतिहास हम हमारे पूर्वजों से जानते आए हैं। मेला इतिहास, धर्म, दर्शन और समाज के अद्वितीय समागम को दर्शाता है। यह मेला न केवल आस्था का प्रतीक है, बल्कि भारतीय दर्शन, परंपरा और खगोलीय विज्ञान का अद्भुत संगम भी है। पौराणिक मान्यता है कि जब बेटी का विवाह होता था तब पिता के द्वारा एक दिन पूर्व माँ के दरबार में जाकर उनसे विवाह के लिए रकम और बर्तन तथा अन्य आवश्यक सामग्री माँगी जाती थी जो माता के द्वारा अगले दिन सुबह दी जाती थी। लेकिन कुछ समय बाद लोगों के मन परिवर्तन होने से उसका दुरुपयोग करने लगे जिससे माता ने तब से सामग्री देना बंद कर दिया था। आज भी लोगों में माता के प्रति अनंत श्रद्धा है। माँ के दरबार में आने वाला व्यक्ति कभी खाली हाथ नहीं जाता है यहाँ पर हर मनोकामना पूर्ण होती है।

क्षेत्र का सबसे बड़ा पशु मेला - यहाँ जनजातीय अंचल का सबसे बड़ा पशु मेला होता है जहाँ पर विभिन्न प्रकार के पशु मेले में क्रय विक्रय के लिए लाए जाते हैं तथा एक से एक पशु हमें इस मेले में मिलते हैं। इस मेले में मुख्य रूप से बैल, गाय, भैंस मिलते हैं। यहीं से किसान

बन्धु भी अपनी खेती की तैयारी चालू कर देता है।

जनजातियों के औजार व दैनिक उपयोग की सामग्री मिलने का एक मात्र स्थान - इस मेले में भीलों के पारंपरिक औजार तीर-कमान, सांग, तीतर फंदा, असुन, सरे, फालिया, कुल्हाड़ी आदि मिलते हैं। इनका उपयोग भील समाज प्राचीन समय में शिकार करने और युद्ध लड़ने में किया करते थे। यहाँ केवल मनोरंजन का केंद्र ही नहीं है बल्कि जनजाति समाज अपने दैनिक उपयोग में आने वाली सामग्री भी इसी मेले से खरीदारी करते हैं। कुछ सामान ऐसा भी होता है जो वर्ष में एक बार खरीदते हैं और साल भर तक चलाते हैं।

भारत देस का वीर

भर नींदड़ली तम सूता रेओ
वी जागे सगळी रात।
अरे वी जागे सगळी रात।

तमारो परिवार सुखी रेवे
वी झेले सगळी घात।
भारत देस का वीर
तमारा जीवन का आधार।।

थोड़ो सो करजो इपे विचार
तमसे एक दन छूटे नी घर।
वी रणबांकुरा आख्खा जीवन
छोड़ी दे घर-बार।।

नारायणी माया, उज्जैन

चट्टान फाड़कर निकली माँ इकलेरा बिजासन

अमित राव पवार ,देवास

भक्ति और शक्ति से ही यह संपूर्ण संसार विद्यमान है। किसी भी कार्य के लिए बल या ताकत अथवा शक्ति की आवश्यकता होती है और शक्ति हमें जगत् जननी माँ जगदंबा के अनेक रूप जो संपूर्ण सृष्टि में स्थापित हैं उनसे प्राप्त होती है। भगवान शिव भक्ति के प्रतीक हैं, तो माँ पार्वती शक्ति की। उदाहरण पेड़ के पत्ते को नीचे गिरने के लिए हवा को काटना होता है जिसके लिए ताकत या शक्ति चाहिए होती है, जो प्रकृति रूपी माँ जगदंबा के रूप में मिलती है। संसार में अनेक माँ के ऐसे शक्ति के स्थान हैं जो हमें इस संसार में जीवनयापन करने के लिए शक्ति प्रदान करते हैं। ऐसा ही एक शक्ति और आध्यात्मिक केंद्र है, **मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के जिला देवास से 55 किलोमीटर दूर तहसील टोंकखुर्द के ग्राम इकलेरा माताजी में विराजित माँ बिजासनी का मंदिर।** मान्यता है कि माँ बिजासन देवी एक चट्टान को फाड़कर यहां प्रकट हुई। यह मंदिर लगभग 860 वर्षों से अधिक प्राचीन बताया जाता है।

एक अखंड ज्योत जो देवी के प्रकट समय से ही निरंतर जल रही है। पूर्व में यह मंदिर घने जंगलों के बीच चट्टान पर हुआ करता था, धीरे-धीरे गांव की आबादी व रहवासी बढ़ने से मंदिर का भी जीर्णोद्धार समय-समय पर होता रहा। यहां वर्ष भर में देवास जिले के साथ ही सीहोर, शाजापुर, इंदौर, उज्जैन, राजगढ़, भोपाल आदि स्थानों से लाखों की संख्या में श्रद्धालु माँ बिजासनी के दर्शन करने आते हैं। यहां मांगी गई मनोकामना पूरी होने की मान्यता है, विशेषकर निःसंतान स्त्री गाय के गोबर से मंदिर की दीवार पर उल्टा स्वस्तिक बनाकर संतान प्राप्ति के लिए प्रार्थना करती है तथा संतान प्राप्ति के बाद पुनः सीधा स्वास्तिक बनाकर पूजा-अर्चना, चढ़ावा चढ़ाती माँ के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रकट करती है। वैसे तो यहाँ वर्ष भर की चारों नवरात्रि का महत्व है। लेकिन हिंदू नववर्ष चैत्र नवरात्रि में शतचंडी यज्ञ का आयोजन होता है और विशेष रूप से ग्रामीण परिवेश का मेला भी आयोजित किया जाता है, जो पूरे 15 दिन का होता है।

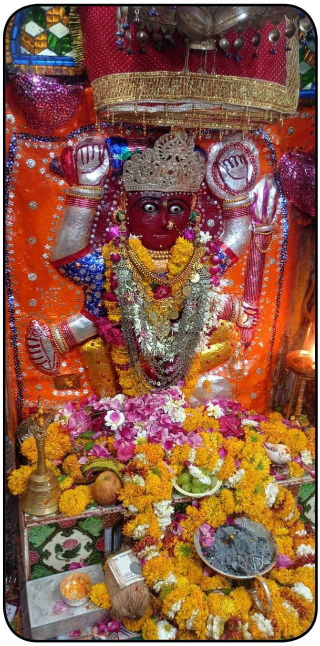

मंदिर के वर्तमान पुजारी श्री गौरीशंकर जी परमार के अनुसार उनके पूर्वज 800 वर्ष पूर्व शाजापुर के ग्राम सुनेरा से ग्राम इकलेरा आए थे। यह इनकी इस मंदिर में सेवा देते हुए 8 वी पीढ़ी है। यहां ऐसा चमत्कार है कि माताजी की पाषाण प्रतिमा दिन में तीन बार अपना रूप बदलती है। प्रातःकाल बालरूप, दोपहर में युवावस्था तथा शाम के समय वृद्धावस्था रूप के दर्शन होते हैं। माताजी के ठीक सामने सिंह की एक पत्थर की प्रतिमा बनी है। जिसके आगे पीछे के पैरों की बीच दूरी बहुत कम है। ऐसा माना जाता है कि निरहंकार भाव से कितना भी भारी शरीर वाला व्यक्ति इधर से उधर निकल सकता है। परंतु अहंकार से दुबला-पतला व्यक्ति भी निकल नहीं सकता। मंदिर के पास एक दूध तलाई है, जहां स्नान करना शुभ माना जाता है। यह स्थान देवास जिले के प्रमुख धार्मिक स्थानों में से एक प्रसिद्ध स्थान है, जो अपनी प्राचीनता, देवी के प्रकट उत्सव व भक्तों की आस्था के लिए प्रसिद्ध है। समय के साथ इस गांव का विकास भी हुआ और दूर-दूर तक इस क्षेत्र को पहचान मिली।

चौपाल

दो मनख्व को घर चलय नी रिया
देस पे चरचा चाली की भाया।
बांय चलय वे चाल्या
फटकड़ा देखी घर में भरय रिया।
सेना तमारी रक्षा वासते,
कदी सोचो हम कय करि रिया।
घर का बारना पे चार ताला लगाय उंघो,
सेनिक ठंडी रात में बायर जागी रिया।
अपणा माय बापू छोर छोरी व्हाला,
सेनिक सबके तजी सीमा पे जय रिया।

नारायणी माया, उज्जैन

शिक्षक दिवस

डॉ. सुब्रतो गुहा

प्राचीन भारत के तक्षशिला विश्वविद्यालय के कालजयी शिक्षक विष्णुगुप्त चाणक्य ने राष्ट्र एवं समाज के लिए शिक्षक के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा था **शिक्षक वह है जिसकी गोद में प्रलय और निर्माण दोनों खेलते हैं। शिक्षक यदि सक्षम हो तो उसके माध्यम से तैयार शिष्य राष्ट्र निर्माण के महत्वपूर्ण दायित्व को निभाने के योग्य बनते हैं। शिक्षक यदि अक्षम हो, तो उसके माध्यम से तैयार शिष्य राष्ट्र के विनाश के कारण बनते हैं।** योग्य शिक्षक ही देश की भावी पीढ़ी अर्थात् युवाओं को सही मार्गदर्शन देकर राष्ट्र की प्रगति व समृद्धि हेतु आदर्श नागरिक बनाते हैं। अपने शिष्य के मन से अज्ञान का अंधकार दूर कर उसमें ज्ञान का प्रकाश फैलाकर उसके जीवन की दशा व दिशा संवारने का कार्य शिक्षक ही कर सकते हैं।

सन् 1962 से 1967 तक भारत के द्वितीय राष्ट्रपति का दायित्व निभाने वाले **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन** ने देश-विदेश के कई महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ाते हुए एक श्रेष्ठ और आदर्श शिक्षक की पहचान स्थापित की थी। जब वे 1962 में भारत के राष्ट्रपति घोषित हुए तब उनके अनेक शिष्यों ने निवेदन करते हुए उनसे कहा था कि हम आपके 5 सितम्बर जन्मदिवस को इस वर्ष आपके महान शिक्षकीय योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए भव्य स्वरूप में मनाएँगे। इस पर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपने शिष्यों से कहा कि आप मनाना ही चाहते हैं तो 5 सितम्बर मेरे व्यक्तिगत जन्मदिवस के रूप में नहीं बल्कि शिक्षक दिवस के रूप में मनाएँ क्योंकि भारत की उन्नति और समृद्धि शिक्षक जगत के सामूहिक योगदान से ही सम्भव हो पाई है। अतः प्रति वर्ष 5 सितम्बर को **शिक्षक दिवस** मनाने की परंपरा 1962 से प्रारंभ हुई जो आज भी निरन्तर जारी है। सनातन भारत में गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था थी जिसमें गुरू के आश्रम अर्थात् गुरूकल में रहते हुए ही शिष्य अपने गुरू अर्थात् शिक्षक से शस्त्र और शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करता था। क्योंकि सनातन भारत में यह मान्यता रही है कि जब-जब शत्रुओं से शास्त्र अर्थात् धर्म-संस्कृति पर संकट आता है तब-तब शस्त्र अर्थात् हथियार द्वारा ही धर्म संस्कृति की रक्षा संभव होती है। चार या पाँच वर्ष के अपने बालक का हाथ पकड़कर पिता गुरूकुल पहुँचते और बालक को गुरू को सौंपते हुए कहते आज से आप ही इसके अभिभावक और शिक्षक हैं इसे उचित शिक्षा देकर देश का योग्य नागरिक बनाएँ। आगामी लगभग बीस वर्षों तक वही बालक अपने गुरू से ज्ञान-विज्ञान व धर्मशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ विभिन्न हथियारों का प्रशिक्षण प्राप्त कर मातृभूमि की सुरक्षा में सक्षम एक योद्धा बन जाता। गुरू भी पिता समान प्रेम व स्नेह शिष्य के प्रति रखते हुए उसे अनुशासन एवं राष्ट्र भक्ति की शिक्षा देते। ऐसे ही महान योगदान के लिए गुरूओं के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए हमारे धर्मशास्त्रों में लिखा है -

गुरूः ब्रह्मा, गुरूः विष्णुः, गुरूः देवः महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

पुण्यभूमि भारत परम वैभव के पथ पर चलते हुए हजारों वर्षों तक विश्वगुरू के आसन पर स्थापित रहा - जिसमें सबसे अधिक योगदान सद्गुरूओं का रहा, जिन्होंने ऐसे सुपात्र शिष्य तैयार किए जो राष्ट्रीय एवं सामाजिक कर्त्तव्य निभाने में सक्षम हुए। भगवान भी जब-जब पुण्यभूमि भारत में मानव अवतार के रूप में आए तब तब उन्हें भी सद्गुरू के ही मार्गदर्शन की आवश्यकता हुई। त्रेतायुग में जब भगवान विष्णु ने प्रभु श्रीराम के रूप में मानव अवतार लिया तब उन्हें गुरू विश्वामित्र से मार्गदर्शन मिला। द्वापर युग में जब भगवान विष्णु ने प्रभु श्रीकृष्ण के रूप में मानव अवतार लिया तब उन्हें गुरू सान्दीपनि से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। तभी तो सद्गुरू को भगवान के समान बताते हुए कहा गया है -

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरू आपकी, गोविन्द दियो बताय।।

सदुरू में सशिष्य अर्थात् सर्वाधिक योग्य शिष्य की पहचान करने का एक विशेष गुण होता है। इसके अनेक उदाहरण हैं। राष्ट्रसंत रामकृष्ण परमहंस के हजारों शिष्य थे जिनमें से उन्होंने योग्यतम शिष्य का चयन अपने आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में किया जिसका नाम था नरेन्द्र नाथ दत्त, जो आगे चलकर स्वामी विवेकानन्द के रूप में विश्व विख्यात हुए तथा समूचे विश्व में हिन्दुत्व की महिमा व भगवा पताका स्थापित करने में सफल हुए। इस वर्ष 5 सितम्बर शिक्षक दिवस पर हम हजारों वर्षों से पुण्यभूमि भारत में सर्वोत्तम गुरु-शिष्य परंपरा का स्मरण करते हुए भारतवर्ष की उन्नति व समृद्धि में सद्गुरूओं के महान योगदान का स्मरण कर निम्नलिखित पंक्तियाँ उनके चरणों में कृतज्ञतापूर्वक अर्पित करते हैं

सद्गुरूओं की जीवनगाथा सीख हमें यह देती है,
हम भी अपने जीवन को उन्नति के शीर्ष पर पहुँचाएं।
और विदाई बेला में अपने पीछे,
समय की रेत पर पदचिन्ह छोड़ जाएँ।।

जनजाति क्षेत्र में नवरात्रि एवं गरबा का महत्व

कृष्णा सेन्दल तेजस्वी

भारत की संस्कृति विविधताओं में भी एकता वाली है। जनजातीय क्षेत्र में नवरात्रि के पावन पर्व का विशेष महत्व होता है। यह मात्र धार्मिक अनुष्ठान नहीं, यह लोक जीवन, नृत्य, संगीत और सामूहिकता का जीवंत प्रतीक है। जनजातीय क्षेत्रों में नवरात्रि का स्वरूप पारंपरिक हिन्दू समाज में जैसे समान रूप से आस्था, उत्साह और आनंद के साथ मनाया जाता है ठीक उसी प्रकार यहाँ भी मनाया जाता है। जनजातीय क्षेत्रों में नवरात्रि के साथ गरबे का आयोजन भी गहरी सामाजिक और सांस्कृतिक महत्ता को ध्यान में रखकर मनाते हैं। क्योंकि यह हमारी संस्कृति की एक अनुपम कृति है। जनजातीय समाज में नवरात्रि में देवी शक्ति की आराधना उपासना का समय मानते हैं। यहाँ पर देवी की प्रायः ग्राम में देवी, माई, माटी अम्बा या धरती माता के रूप में पूजा अर्चना की जाती है। पहले दिवस कलश स्थापना और अंकुर (जवारे) बोना उर्वरता, समृद्धि और फसल की प्रचुरता का प्रतीक माना जाता है। ऐसा कहते हैं इन जवारों में धरती माता का वास होता है। पूजा में ढोल, मांदल, नगाड़ों और स्थानीय पारंपरिक वाद्यों का प्रयोग करते हैं, देवी, माई, माटी अम्बा या धरती माता के सेमान में लोकगीत उत्साह और उल्लास से गाते हैं। अपने आलीराजपुर, झाबुआ, बड़वानी क्षेत्र में नवरात्रि जनजातीय समाज के लिए केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि पूरे गाँव और संपूर्ण समाज को एक साथ आकर पूजन करने का अवसर होता है। ऐसे पुनीत अवसर पर सभी लोग मिलकर पूजन पाठ करते हैं। इन जिलों में पूर्व में माताजी पूरे गॉंव में एक बैठाई जाती थी, अब माता की महिमा इतनी फैल गई है कि आज गॉंव के हर फलिए में माता की स्थापना करने लगे हैं। इस समय सभी लोग माता की उपासना करने के लिए एक स्थान पर एकत्रित होते हैं, सामूहिक पूजा करते हैं और सांस्कृतिक पारंपरिक गरबा नृत्य करते हैं। यह परंपरा सामाजिक एकता, सहयोग और बन्धुत्व भाव का निर्माण करती है। नवरात्रि में जनजातीय क्षेत्र में गरबा केवल मनोरंजन नहीं बल्कि देवी, माई, माटी अम्बा या धरती माता के चारों ओर गोल घेरा बनाकर किया जाने वाला वह सामूहिक नृत्य है, जिसमें जीवन के चक्र, ऋतु परिवर्तन और सृष्टि के सतत प्रवाह का प्रतीक छिपा होता है। जनजातीय क्षेत्रों में गरबा करते समय पारंपरिक लोकगीत, वीर गाथाएँ और देवी स्तुतियाँ गाई जाती हैं। नृत्य की लय और ताल में श्रम, आनंद और आस्था का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। जनजातीय क्षेत्र में नवरात्रि का उत्सव देखते ही ऐसा लगता है मानो गूंगे व्यक्ति को वाणी मिल गई हो, अंधे को आँखें, लंगे को पैर, बहरे को कान मिल गए हों। अपनेआप ही माँ के दरबार में पैर थिरकने लगते हैं।

लोक कला का प्रदर्शन - गरबा करते समय मातृशक्ति रंग-बिरंगे वस्त्रों को धारण करती हैं, ओढ़नियाँ और आभूषण पहनती हैं, पुरुष पारंपरिक धोती-कुर्ता या फेटा (साफा) बाँधते हैं। वेशभूषा में स्थानीय कढ़ाई, मिरर वर्क और मोतियों का काम जनजातीय कला की झलक देता है। यह अवसर लोक शिल्प और पारंपरिक कारीगरी को भी प्रोत्साहित करते हुए दिखाई देता है। नवरात्रि और गरबा के आयोजन से जनजातीय क्षेत्रों में स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प, वाद्य निर्माण, वेशभूषा और खाद्य पदार्थों की बिक्री बढ़ती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। यह समय बाहरी पर्यटकों और शोधकर्ताओं को आकर्षित करता है, जिससे सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा मिलता है और लोग यहाँ दूर-दूर से देखने आते हैं।

पीढ़ी दर पीढ़ी तक परंपरा का निर्वहन होता है। गरबा और नवरात्रि के माध्यम से जनजातीय समाज की मौलिक परंपराएँ, गीत, नृत्य और लोककथाएँ नई पीढ़ी तक पहुँचती हैं। यह केवल आस्था नहीं, हमारी संस्कृति का संरक्षण भी है। जनजातीय क्षेत्रों में नवरात्रि और गरबा केवल धार्मिक पर्व नहीं, यह सामूहिक आस्था, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, सामाजिक एकता और आर्थिक सशक्तिकरण का भी माध्यम है। यह परंपरा न केवल देवी के प्रति श्रद्धा को प्रकट करती है, यह जनजातीय जीवन की जीवंतता और लोक संस्कृति की अनूठी पहचान को भी संरक्षित रखती है और हमारे समाज को एक नई दिशा प्रदान करती है। संपूर्ण समाज में व्याप्त यह नवरात्रि का उत्सव **हिन्दवः सहोदरा सर्वे** के भाव से प्रत्येक व्यक्ति को ऊर्जा प्रदान करते हुए सारे हिन्दू समाज को शक्ति प्रदान करने का उत्सव है।

माता के रूप में संजा

माता के रूप में संजा संपूर्ण निमाड़ व मालवा में पूजनीय है। यह पर्व भाद्रपद माह के शुक्लपक्ष की पूर्णिमा से पितृमोक्ष अमावस्या तक मनाया जाता है। यह संजा माता के पूजन का पर्व ही नहीं अपितु संजा माता के रूप में पितरों की आराधना का अनूठा पर्व है। इसमें गाय के गोबर से कुँआरी कन्याएँ सुन्दर रचनाएँ बनाती हैं। सायं को सभी कन्याएँ एकत्रित होकर घर-घर बनाई जाने वाली संजा माता की पूजा, आरती व प्रसाद वितरण करती हैं। निमाड़ में निमाड़ी व मालवा में मालवी लोकभजनों के माध्यम से माता को भज लेती हैं। संजा एक लोकपर्व है, इसमें जो गीत गाए जाते हैं, उनकी बानगी इस प्रकार है - संझा बाई को छेड़ते हुए लड़कियां गाती हैं-

संझा बाई का लाड़ाजी, लूगड़ो लाया जाड़ाजी
असो कई लाया दारीका, लाता गोट किनारी का।
संझा तू थारा घर जा कि थारी मां मारेगी कि कूटेगी
चांद गयो गुजरात हरणी का बड़ा-बड़ा दांत,
कि छोरा-छोरी डरपेगा भई डरपेगा।
म्हारा अंगना में मेंदी को झाड़, दो-दो पत्ती चुनती थी
गाय को खिलाती थी, गाय ने दिया दूध,दूध की बनाई खीर
खीर खिलाई संझा को, संझा ने दिया भाई,भाई की हुई सगाई, सगाई से आई भाभी, भाभी को हुई लड़की, लड़की ने मांडी संझा

संझा सहेली बाजार में खेले, बाजार में रमे वा किसकी बेटी व खाय-खाजा रोटी वा पेरे माणक मोती, ठकराणी चाल चाले, मराठी बोली बोले, संझा हेड़ो, संझा ना माथे बेड़ो।

इस दौरान संझा बाई को ससुराल जाने का संदेश भी दिया जाता है-
छोटी-सी गाड़ी लुढ़कती जाय, जिसमें बैठी संझा बाई सासरे जाय,
घाघरो घमकाती जाय, लूगड़ो लटकाती जाय बिछिया बजाती जाय।

म्हारा आकड़ा सुनार, म्हारा बाकड़ा सुनार, म्हारी नथनी घड़ई दो मालवा जाऊं, मालवा से आई गाड़ी इंदौर होती जाय इसमें बैठी संझा बाई सासरे जाय।

संझा बाई का सासरे से, हाथी भी आया, घोड़ा भी आया, जा वो संझा बाई सासरिये,

अब पढ़ें, संझा बाई क्या जवाब देती है-
हूं तो नी जाऊं दादाजी सासरिये
दादाजी समझाते हैं- हाथी हाथ बंधाऊं, घोड़ा पाल बंधाऊं,
गाड़ी सड़क पे खड़ी जा हो संझा बाई सासरिये।

गीत के अंत में भोग लगाकर गाते हैं-
संझा तू जीम ले, चूढ ले मैं जिमाऊं सारी रात, चमक चांदनी सी रात,
फूलो भरी रे परात, एक फूलो घटी गयो, संझा माता रूसी गई,
एक घड़ी, दो घड़ी, साढ़े तीन घड़ी।

संजा पर्व के दिनों में प्रतिदिन शाम को कुंआरी कन्याओं द्वारा घर-घर जाकर इस तरह के कई गीत गाकर संझादेवी को मनाया जाता है एवं प्रसाद वितरण किया जाता हैं।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

आराधना शक्ति और समरसता की त्रिवेणी है

माँ राजराजेश्वरी शक्ति पीठ

प्रवीण शर्मा

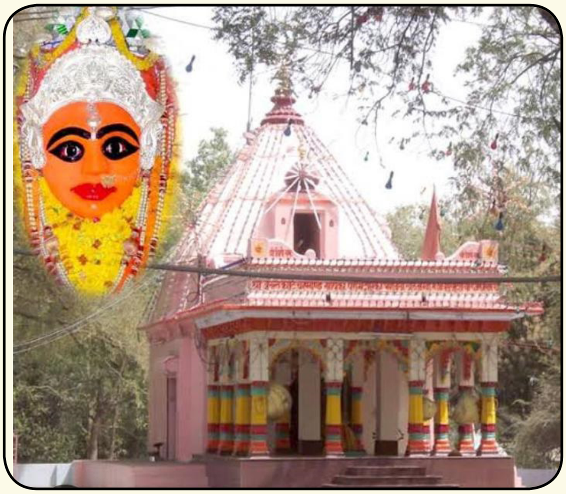

मध्यप्रदेश के शाजापुर जिला मुख्यालय में आगरा-मुंबई राजमार्ग पर स्थित माता राजराजेश्वरी का मंदिर अपने आप में इतिहास की कई कहानियों को समेटे हुए है। वर्तमान में भी माता का यह मंदिर न केवल शक्ति की आराधना का केंद्र है अपितु सामाजिक एकता और समरसता का भी प्रतीक है। यह चीलर नदी के पास स्थित एक ऐतिहासिक प्राचीन मंदिर है। यहाँ पर प्रतिवर्ष चेत्र मास में लगने वाले मेले में देश भर के अलग-अलग स्थानों से व्यापारी आते हैं। श्रद्धालुओं का सैलाब मेले की भव्यता को द्विगुणित कर देता है।

51 वां शक्तिपीठ है चमत्कारों से भरपूर - जन-आस्था और मान्यताओं का केंद्र माता राजराजेश्वरी का मंदिर 52 वां शक्तिपीठ है। इस मंदिर का उल्लेख स्कंद पुराण में भी मिलता है। पंडित आशीष नागर के अनुसार ऐसी कथा है कि जब दक्ष प्रजापति ने यज्ञ किया था तो उसमें भगवान महादेव को आमंत्रित नहीं करने से नाराज होकर माता सती ने यज्ञकुंड में अपने आप को ही अग्नि को समर्पित कर दिया था। जब महादेव को इस बात का पता चला तो वे क्रोधित होकर माता सती की देह को लेकर निकले। महादेव के रौद्र रूप को शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने माता का अंग-भंग कर दिया। जहाँ पर भी माता के अंग गिरे, वे सभी स्थान शक्ति पीठ कहलाते हैं। शाजापुर में माता का दाहिना चरण गिरा था जिसके निशान आज भी गर्भगृह में विद्यमान हैं। सन् 1991में शंकराचार्य स्वरूपानंद जी माता मंदिर में दस दिवस रुके और उन्होंने स्कंद पुराण में उल्लेख के आधार पर माता त्रिपुर सुंदरी की स्थापना की। मन्दिर के गर्भगृह में श्रीयंत्र और माता के चरण चिह्न मंदिर के महत्व को बताते हैं।

राजा भोज ने करवाया था जीर्णोद्धार - मंदिर की प्राचीनता और प्रामाणिकता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि सन् 1060 में राजा भोज ने मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था। पंडित आशीष नागर बताते हैं कि मंदिर के सामने सभामण्डप का निर्माण सन् 1760 में किया गया था। जब आक्रांताओं द्वारा मन्दिरों को निशाना बनाया जा रहा था तब रहवासियों ने अपनी आराध्या देवी को बचाने के लिए छबाई कर दी थी, जिससे कुछ समय तक लोगों द्वारा यहाँ शनि मंदिर के रूप में पूजा होती रही। परन्तु 1968 में उनके दादाजी पुजारी हरिशंकर नागर को आए स्वप्न के आधार पर जब खुदाई की गई तो मंदिर परिसर में शिव परिवार की प्रतिमा और त्रिशूल व चिमटा निकला, जिसे भी विधिवत अनुष्ठान के साथ मंदिर में प्रतिष्ठित किया गया है।

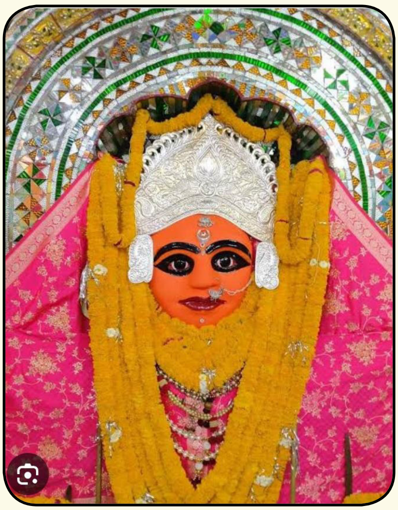

सामाजिक समरसता का केंद्र - माता राजराजेश्वरी का मंदिर शाजापुर जिले के साथ राजगढ़, देवास, आगर जिले के श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है, जहाँ माता के दर्शन के लिए प्रतिदिन सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालु पहुँचते हैं। नवरात्रि में यह संख्या लाखों में पहुँच जाती है। माता के दरबार में आरती के लिए एक 60 सदस्यीय टीम है जिसमें शाजापुर के हिंदू समाज के प्रत्येक वर्ग की समान उपस्थिति है। यह मंदिर न सिर्फ आस्था बल्कि सामाजिक समरसता और सद्भाव का भी अनुपम उदाहरण है।

रतलाम के ह्रदय में बसी कालिका माता

वैदेही कोठारी, रतलाम

रतलाम शहर के बीचों-बीच स्थित माँ कालिका अद्भुत एवं चमत्कारिक देवी हैं। कालिका माता मंदिर के गर्भगृह में तीन देवियाँ विराजमान हैं, **देवी कालिका माता, अन्नपूर्णा एवं चामुंडा माता।** मंदिर के गर्भगृह में सकारात्मक ऊर्जा और शांति का वास होता है। चैत्र और गुप्त नवरात्रियों में श्रद्धालुओं की अत्यंत भीड़ रहती है। चैत्र नवरात्रि में यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। चैत्र नवरात्रि में कालिका माता परिसर में सप्तमी, अष्टमी और नवमी पूर्णरात्रि गरबा रास होता है। गरबा कर रही भक्त युवतियों के कथन के अनुसार उस दौरान माता स्वयं उनके साथ गरबा करती महसूस होती हैं, साथ ही वे अद्भुत शक्ति का अनुभव करती हैं। चैत्र नवरात्रि में मंदिर में नौ दिनों तक श्रद्धालुओं की अत्यंत भीड़ रहती है। अष्टमी के दिन यहाँ महायज्ञ होता है, जिसकी आँच लगभग चार-पांच दिनों तक बनी रहती है। यहाँ पर माँगी हुई हर मन्नत पूरी होती है। नवरात्रि के दौरान पूरा मंदिर और परिसर को रंग-बिरंगी लाइटों से सजाया जाता है, जिससे मंदिर अत्यंत मनमोहक लगता है।

इतिहास - कहते हैं कि माँ कालिका यहाँ के राजा रतनसिंह के राजघराने की कुलदेवी थीं। वे कुलदेवी को पूजने रतलाम से पंद्रह किलोमीटर दूर धराड जाया करते थे। एक दिन महाराज रतनसिंह ने माँ से आग्रह किया कि वह रतलाम उनके साथ चले। माँ ने आग्रह स्वीकार किया। जिस रथ पर माँ की प्रतिमा थी वह रथ स्वयं ही रतलाम के एकदम मध्य में रुक गया, वह आगे एक कदम भी नहीं बढ़ा। इसलिए माता के मंदिर का निर्माण यहीं किया गया। रतलाम में माता की स्थापना लगभग 350 वर्ष पूर्व की गई थी।

यह भी कहा जाता है कि कालिका माता मंदिर में बकरे की बलि दी जाती थी, बलि के मांस का माता को भोग लगाया जाता था। कुछ वर्षों पश्चात् कालका माता मंदिर से कुछ दूर एक संत ने कुटिया बनाई जिसमें रामस्नेही पंथ के संत गलतानदास जी राम नाम का प्रचार-प्रसार खूब जोरों से कर रहे थे। जिससे कई लोग राम नाम से प्रभावित हो रहे थे। एक रात्रि माँ गलतान दास जी से भेंट करने आई और कहा, **आप राम नाम के संत हैं, आपके प्रचार से मेरे भक्त दुविधा में हैं।** संत ने मुस्कुराते हुए कहा, आप निश्चिंत रहें, आपके भक्त आपके ही रहेंगे, किन्तु आपको एक वचन देना होगा, बलि दिलवाना बंद करवा दें। राजा के स्वप्न में माता रानी ने बलि देने के लिए मनाही कर दी। तब से आज तक यहां बलि नहीं दी जाती है। मंदिर के पास ही एक छोटा सा अष्टकोणीय तालाब है, कहते हैं राजा की पत्नी झाली के नाम से यह अष्टकोणीय तालाब लाल गुलाबी पत्थरों से बनाया गया था। तालाब में बावन सीढ़ियाँ हैं। तालाब के पास ही बगीचा भी बनाया गया है, बारिश में यह अत्यंत सुन्दर और मोहक दिखाई देता है। हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार ने मंदिर को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए माँ कालिका लोक परियोजना शुरू की है, जिसमें भव्य मंदिर द्वार और सौंदर्यकरण के साथ ही सांस्कृतिक मंच का निर्माण शामिल है। इस परियोजना में बारह करोड़ का खर्च होने का अनुमान बताया जा रहा है।

भारतीय जनजाति और नवरात्र

अनव रघुवंशी

माँ दुर्गा व उनके स्वरूपों को पूजने और अर्चना करने के विशेष दिन अर्थात् नवरात्र, ये त्यौहार भारत के कोने-कोने में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। शहरी लोगों के लिए ये **लाल-लाल सनेडो** पर रोज पारंपरिक पोशाक में थिरकने का अवसर है वहीं दूसरी ओर ये नवरात्र भारत के छोटे गांवों में, जंगलों में रह रहे जनजाति समुदाय के लिए वास्तव में माँ दुर्गा की, प्रकृति की ओर अपनी आस्था और विश्वास को प्रगाढ़ करने का अवसर है। जनजाति माने मानव का ऐसा समूह जो एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में रहता है और जिसकी पहचान उसकी भाषा, संस्कृति, परंपरा, सामाजिक संगठन और प्रकृति के प्रति विशेष प्रेम से बनती है। जहाँ आम जन-मानस भारत को भिन्न-भिन्न जातियों के आधार पर बाँट कर देखता है, वहीं जनजाति समुदाय के लोग, जन को जाति से परे रखकर, सभी को प्रकृति के अंश स्वरूप में पूजते हैं और प्रकृति व शक्ति की आराधना नवरात्र के महापर्व पर करते हैं। जहाँ ये किसी डीजे और स्पीकर की सहायता लिए बिना अपनी पारंपरिक ढोलक, टिकी, झांझर जैसी अन्य वस्तुओं की सहायता से अपने और अपनी माँ के बीच की दूरी को मिटाकर भक्तिभाव में पूर्ण होकर त्यौहार मनाते हैं। आधुनिकता की दौड़ में सबसे आगे रहने वाले शहरी लोग अपनी संस्कृति को समझने में अक्सर पीछे रह जाते हैं। लाग लपेट, दिखावे से दूर निर्मल मन से कैसे पूजा की जा सकती है इसका साक्षात प्रमाण हमें जंगलों में रह रहे आदिवासी लोगों की जीवनशैली को देखकर मिल सकता है। उनकी पूजा में प्रकृति, लोक कला और सदियों पुरानी परंपराओं का दुर्लभ संगम होता है। भारत में हर जनजाति की नवरात्रि मनाने की अपनी एक अनूठी परंपरा है, जो उनकी संस्कृति और प्रकृति से जुड़े गहरे संबंधों को दर्शाती है।

भील जनजाति (राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात)

भील जनजाति अधिकतर चैत्र नवरात्रि के बीच आने वाला पर्व **गणगौर** बेहद उत्साह से मानते हैं। **गण** अर्थात भगवान शिव और **गौर** माने देवी पार्वती। विवाहित महिलाएँ अपने पति के दीर्घायु और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए तथा अविवाहित महिलाएँ अच्छे वर की प्राप्ति के लिए व्रत रखती हैं। विशेष बात यह है कि इस समय महिलाओं द्वारा बाँस की टोकरियों में गेहूँ के जवारे बोए जाते हैं, जो सृजन और मातृशक्ति के प्रतीक हैं।

संथाल जनजाति (झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा)

संथाल जनजाति, नवरात्र को उत्सव के रूप में नहीं अपितु शोक के रूप में देखते हैं। इस समय वे अपने पूर्वज महिषासुर की मृत्यु का दु:ख व्यक्त करते हैं, जिसे दसाय पर्व या हुदुर दुर्गा पर्व कहते हैं। वे इस दौरान **दसाई नृत्य** करते हैं, जिसमें पुरुष महिलाओं के कपड़े पहनकर नृत्य करते हैं। एक अन्य कथा यह भी है कि इस समुदाय के कुछ लोग दस दिन देवी जाहेर-एरा की पूजा करते हैं। संथाल लोक कथा के अनुसार देवी जाहेर-एरा ने भोले-भाले ग्रामीणों पर जुल्म करने और उनकी फसल को नष्ट करने वाले महिषासुर नाम के राक्षस का वध किया था। उन्हें इसका वध करने में दस दिन लगे थे। इस अवसर को याद करने के लिए प्रत्येक वर्ष नवरात्रि के दौरान यह समाज देवी जाहेर-एरा की पूजा करता है। दस दिनों तक चलने वाले इस पर्व के दौरान पहले नौ दिन संथाल नवयुवकों की टोली घर जाकर जासूसी का स्वांग करते हुए महिषासुर को खोजते हैं। दसवें दिन इसे खोजकर देवी जाहेर-एरा को इसकी सूचना दी जाती है। उसी दिन देवी उसे खींचकर दिशोम जाहेर-थान लाकर वहीं उसका वध कर देती है।

बैगा जनजाति (मध्य प्रदेश)

बैगा जनजाति मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों, जैसे मंडला, डिंडोरी और बालाघाट जिलों में पाई जाती है। नवरात्र के दौरान वे मरही माता और महारानी खाम्भ की पूजा करते हैं। इस समुदाय के गाँवों में तालाब के किनारे महारानी खाम्भ और मरही माता के झूले लगे रहते हैं। बैगा जनजाति मरही माता को बीमारी फैलाने और महारानी माता को बीमारियों एवं विपदाओं से बचाने वाली देवी मानते हैं। चैत्र नवरात्रि तथा महामारी फैलने के दौरान इन दोनों बहनों की पूजा करने की परंपरा है। इस दौरान वे केवल जंगल से इकट्ठा किए गए फल और सब्जियों का सेवन करते हैं, जो उनके प्रकृति-निर्भर जीवन को दर्शाता है।

गोंड जनजाति (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र)

गोंड जनजाति, नवरात्रि को **जवारा उत्सव** के रूप में मनाती है। जवारा का अर्थ है **जौ** और यह जीवन की उत्पत्ति का प्रतीक माना जाता है। वे नवरात्रि के पहले दिन मिट्टी के बर्तन में जौ बोते हैं और नौ दिनों तक उसकी देखभाल करते हैं। वे मानते हैं कि जवारा में देवी का वास होता है। जबलपुर के पास रह रहे गोंड समुदाय में मुख्य रूप से **खेरमाई माता** का पूजन होता है। जनजातीय प्रकृति पूजन को प्रधानता देते हैं लेकिन प्रकृति के तत्वों को ही मिलाकर मूर्ति की स्थापना कर पूजन करते हैं।

कोया जनजाति (आंध्र प्रदेश, तेलंगाना)

कोया जनजाति की नवरात्रि एक खेती-आधारित त्यौहार है जहाँ विशेष रूप से अच्छी फसल और सुरक्षा के लिए पूजा की जाती है। मुख्य रूप से देवी दुर्गा की **शैलपुत्री** रूप में पूजा की जाती हैं। यहाँ प्रकृति और पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाने पर जोर दिया जाता है।

रबारी जनजाति (गुजरात, राजस्थान)

रबारी जनजाति घुमंतू पशुपालक समुदाय है। नवरात्रि के समय वे अपने पशुधन के साथ देवी अंबा की विशेष पूजा करते हैं। उनका मानना है कि देवी ही उनके पशुओं और आजीविका की रक्षा करती हैं। रबारी महिलाएँ इस अवसर पर लाल और काले रंग के पारंपरिक वस्त्र पहनकर सामूहिक नृत्य और गीत प्रस्तुत करती हैं। इन गीतों में अंबा माताजी के शौर्य और करुणा का वर्णन होता है। पशुओं की पूजा और उन्हें तिलक लगाना इस समुदाय की विशिष्ट परंपरा है।

गरासिया जनजाति (राजस्थान)

गरासिया समुदाय देवी अंबा और शक्ति की उपासना में **गरबा** और सामूहिक नृत्य करते हैं। इनके गरबा गीत, प्राचीन लोककथाओं और देवी की वीरता का वर्णन करते हैं। दीपक को घेरे में रखकर स्त्रियाँ पूरी रात नृत्य करती हैं। यह पर्व केवल धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ करने और सामूहिक एकता का प्रतीक भी है।

बंजारा जनजाति (आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना)

बंजारा समुदाय नवरात्रि में देवी संतोषी माता और जगदंबा की पूजा करता है। महिलाएँ रंग-बिरंगे वस्त्र पहनकर सामूहिक नृत्य **लंबाड़ा** करती हैं। इस नृत्य में उनके पारंपरिक आभूषण और घाघरा-चोली की झंकार विशेष आकर्षण होती है। बंजारा समुदाय देवी से जीवन में सुख-समृद्धि और यात्रा में सुरक्षा की प्रार्थना करता है। इनके गीत और नृत्य नवरात्रि की रातों को जीवंत बना देते हैं। इन जनजातीय परंपराओं को देखने से स्पष्ट होता है कि भारत में नवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं बल्कि सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक समन्वय का अद्भुत उदाहरण है। प्रत्येक जनजाति इसे अपनी जीवनशैली, प्रकृति और विश्वासों से जोड़कर मनाती है। कहीं यह कृषि और पशुपालन की उर्वरता का प्रतीक है, तो कहीं स्त्री-शक्ति और ग्रामदेवी की आराधना का। शहरी जीवन जहाँ कभी-कभी दिखावे में उलझ जाता है, वहीं आदिवासी अपनी सादगीपूर्ण पूजा से यह संदेश देते हैं कि देवी माँ की सच्ची आराधना प्रकृति और जीवन के संतुलन को बनाए रखने में निहित है।

खंडवा जिले के प्रमुख देवी स्थलों की सूची:

❖ नागचुन देवी मंदिर, खंडवा

स्थान - खंडवा शहर के पास, एक पहाड़ी पर स्थित।

विशेषता - यह मंदिर एक ऊँचे टीले पर स्थित है, जहाँ श्रद्धालु सीढ़ियाँ चढ़कर पहुंचते हैं। यहाँ से शहर का सुंदर दृश्य भी दिखाई देता है।

मान्यता - मां नागचुन को नगर की रक्षक देवी माना जाता है।

❖ हरसिद्धि माता मंदिर, पंधाना

स्थान - खंडवा से लगभग 20-25 किमी दूर, पंधाना कस्बे में।

विशेषता- यह मंदिर उज्जैन की हरसिद्धि माता से जुड़ा हुआ माना जाता है।

मान्यता- नवरात्रि में विशेष पूजन व मेला लगता है।

❖ काली माता मंदिर, खंडवा

स्थान - खंडवा शहर के अंदर।

विशेषता - माँ काली की भव्य प्रतिमा और शक्तिपूजन हेतु प्रसिद्ध।

मान्यता - विशेष रूप से अष्टमी, नवमी और दीपावली पर यहाँ विशेष दर्शन होते हैं।

❖ श्यामला माता मंदिर, छैगांव माखन

स्थान- छैगांव माखन गाँव (खंडवा जिले के अंदर)।

विशेषता - श्यामला माता को ग्रामीण देवी के रूप में पूजा जाता है। स्थानीय जनमानस की विशेष श्रद्धा है।

मान्यता - फसल की रक्षा और गाँव की समृद्धि हेतु पूजी जाती हैं।

❖ त्रिवेणी देवी मंदिर, मूंदी

स्थान - मूंदी नगर, खंडवा जिले में।

विशेषता - मंदिर नदी के संगम के पास स्थित है, त्रिवेणी संगम स्थल होने के कारण इसका धार्मिक महत्व है।

❖ माताजी मंदिर, भवानी नगर / मूंदी क्षेत्र

ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक **ग्राम देवी** मंदिर स्थित हैं, जैसे कि भवानी माता, दुर्गा माता, रेवड़ी माता आदि – जिनकी पूजा ग्रामवासियों द्वारा की जाती है।

❖ धवड़ी माता मंदिर (जिला सीमांत)

स्थान- खालवा क्षेत्र की ओर।

विशेषता- आदिवासी क्षेत्रों में लोक आस्था की देवी हैं।

मान्यता - वनदेवी स्वरूप में पूजी जाती हैं।

हम उस युग के बेटे हैं जब, घर - घर घर होते थे।
घर के मालिक भी हम ही, हम ही नौकर होते थे।।

घर - घर थे मिट्टी के चूल्हे, मिट्टी की दीवारें।
दीवारों पर मिट्टी की छत, मिट्टी की मुड़गारें।।
मिट्टी के ही खेल-खिलौने, ढोलक और मँजीरे।
मिट्टी में खेला करते थे, धूल-भरे सब हीरे।।
कुछ पर छत भी न थी फूस के ही छप्पर होते थे।
हम उस युग के बेटे हैं जब, घर - घर घर होते थे।।

सबसे पहले माँ उठती जब, रात बीत जाती थी।
चकिया पर अनाज पीसते, हुए गीत गाती थी।।
बैल-भैंस को बाँध पिताजी, खुद सानी करते थे।
गोबर उठा बुहार कुएँ पर, जा पानी भरते थे।।
मम्मी-पापा ही घर के, गौरी - शंकर होते थे।
हम उस युग के बेटे हैं जब, घर-घर घर होते थे।।

दादाजी से मम्मी-पापा, मन ही मन डरते थे।
तब हम ही दादाजी पर, दादागिरी करते थे।।
दादी चेहरा देख अनमना, यूँ उलाँट पड़ती थी।
निरपराध मम्मी-पापा पर, बहुत डाँट पड़ती थी।।
अनुशासन में बँधे मगर हम, नट - नागर होते थे।
हम उस युग के बेटे हैं जब, घर - घर घर होते थे।।

सभी पड़ौसी चाचा-चाची, बुआ-बहिन चढ़कर थे।
खास खून के रिश्तों से भी, सगे और बढ़कर थे।।
हर आँगन सबका आँगन था, खुल्ला वातायन था।
पूरा गाँव लाड़ करता था, नहीं परायापन था।।
प्रेम बरसते थे सावन से, दुःख बाहर रोते थे।
हम उस युग के बेटे हैं जब, घर - घर घर होते थे।।

पिज्जा-बर्गर, लिम्का-कोको, कॉफी-चाय नहीं थी।
रबड़ी-कलाकंद खाते थे, दुखिया गाय नहीं थी।।
छाछ-मलाई, दूध-दही-घी, की नदियाँ बहतीं थीं।
बेशक मेहनत थी घर - घर में, पर खुशियाँ रहतीं थीं।।
अतिथि देव होते थे घर - घर, सब किंकर होते थे।
हम उस युग के बेटे हैं जब, घर - घर घर होते थे।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

एक गीत

ऐसा बाग लगाओ माली, खुशबू बहे जमाने में।
लूट सके सो जीभर लूटे कमी न पड़े खजाने में।।

उड़ें तितलियाँ रंग-बिरंगी, चिड़े-चिड़ी डालों पर खेलें।
मदमाते मधुकर कुछ गायें, पेड़ों से लिपटीं हों बेलें।।

मद्धिम-मद्धिम चलें बयारें, मस्ती की झर उठें फुहारें,
कोई कसर न रहे प्रेम की, परिभाषा बतलाने में।।
ऐसा बाग------------।।1।।

थके परखेरू भली नींद लें, सुबह मिले कलरव सुनने को।
थिरक उठे संगीत प्रीति का, गीत चलें सपने चुनने को।।

महक उठे धरती का कण-कण,
बीते मदिर राग में क्षण-क्षण,
पत्ती-पत्ती खुली हवा में, लग जाए इतराने में।।
ऐसा बाग------------।।2।।

कलियों को खिल जाने देना, फूलों को मुस्काने देना।
जो भी आना चाहे साथी, खोलो फाटक आने देना।।

चौकीदारों से कह देना, सबके कोप तलक सह लेना,
कोई रोक-टोक मत करना, मौसम लगे रिझाने में।।
ऐसा बाग------------।।3।।

लिए हवा सन्देशा आए, कोयल पाती खोल सुनाए।
रसमय वाणी में आमंत्रण, देकर रति बोले बतियाये।।

तन के साथ 'प्राण' अभ्यागत, करते हुए मिलेंगे स्वागत,
लो सुगन्ध का नेह निमंत्रण, मालिन लगे बुलाने में।।
ऐसा बाग------------।।4।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

लव जिहाद और नवरात्रि: एक सामाजिक विमर्श

वरुणी मंडोलिया

भारत एक विविधताओं से भरा ऐसा देश है, जहाँ धर्म, संस्कृति और परंपराएँ गहराई से समाज में रची-बसी हैं। हर त्यौहार का अपना महत्व है और नवरात्रि एक ऐसा पर्व है जो शक्ति, नारी सम्मान और धार्मिक आस्था का प्रतीक माना जाता है। लेकिन हाल के वर्षों में, कुछ सामाजिक और राजनीतिक बहसें नवरात्रि जैसे धार्मिक आयोजनों से भी जुड़ गई हैं – विशेष रूप से **लव जिहाद** के संदर्भ में।

लव जिहाद में एक मुस्लिम पुरुष, एक गैर-मुस्लिम महिला से प्रेम या विवाह संबंध स्थापित कर उसे इस्लाम धर्म में परिवर्तित करने का प्रयास करता है। यह शब्द सबसे पहले 2009 के आस-पास कुछ दक्षिण भारतीय राज्यों में सुना गया था, और इसके बाद से विभिन्न राजनीतिक दलों, धार्मिक संगठनों और मीडिया में इसकी चर्चा होती रही है। हालाँकि, कई मामलों में जाँच एजेंसियों और अदालतों ने यह स्पष्ट किया है कि **लव जिहाद** एक संगठित साजिश नहीं है और ऐसे अधिकांश केस व्यक्तिगत संबंधों या सहमति से जुड़े होते हैं। इसके बावजूद, यह मुद्दा सामाजिक चिंता और धार्मिक ध्रुवीकरण का विषय बन गया है।

नवरात्रि केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, यह युवा वर्ग के लिए सांस्कृतिक मेल-मिलाप का भी अवसर होता है। गरबा, डांडिया और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से युवक-युवतियां आपस में मिलते हैं, जो कभी-कभी प्रेम संबंधों की शुरुआत भी बन सकते हैं। हाल के वर्षों में कुछ समूहों द्वारा यह दावा किया गया है कि नवरात्रि के दौरान **लव जिहाद** के मामले बढ़ सकते हैं, जिससे कुछ संगठनों ने गरबा आयोजनों में **पहचान-पत्र चेक करने** और धर्म विशेष के लोगों के प्रवेश पर रोक लगाने जैसी बातें भी कही हैं।

धार्मिक आयोजनों का उद्देश्य मेल-जोल, सद्भाव बढ़ाना और आत्मिक उन्नति होता है। यदि हम इनमें संदेह, भेदभाव और नफरत का ज़हर घोलते हैं, तो यह हमारी मूल सांस्कृतिक भावना के विपरीत है। अगर किसी भी प्रकार का धोखा या जबरदस्ती संबंधों में हो रहा है, चाहे वह किसी भी धर्म या जाति के व्यक्ति के साथ हो, तो यह कानून का विषय है। जब हम इन मुद्दों पर परिजनों (परिवारों) की राय की बात करते हैं, तो यह राय मुख्यतः सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होती है।

पारंपरिक हिंदू परिवार अक्सर अपनी बेटियों को नवरात्रि

जैसे त्यौहारों के दौरान सावधानी बरतने की सलाह देते हैं। उनका मानना होता है कि इस समय पर **अजनबियों** से मेल-जोल सीमित होना चाहिए, खासकर यदि युवक किसी अन्य धर्म से संबंध रखते हों। कुछ मामलों में वे **लव जिहाद** को वास्तविक खतरे के रूप में देखते हैं। कुछ परिवार नवरात्रि के दौरान गरबा कार्यक्रमों में भाग लेने से बेटियों को रोकते हैं, खासकर रात में। इसका कारण न सिर्फ सुरक्षा होता है, बल्कि बढ़ती अफवाहों और खबरों से उत्पन्न सामाजिक डर भी होता है। नवरात्रि देवी की आराधना का पर्व है, जो नारी शक्ति, सच्चाई और न्याय का प्रतीक है। ऐसे में हमें इन मूल्यों को अपने सामाजिक जीवन में भी उतारना चाहिए। **लव जिहाद** जैसे विषयों पर विचार करते समय सावधानी, समझदारी और तथ्यों की पड़ताल जरूरी है। धर्म के नाम पर नफरत नहीं, संवाद और सम्मान की जरूरत है।

हमारी बातचीत

प्रिय पाठकों ,

अगले माह से आपकी अपनी पत्रिका जागृत मालवा में एक नया स्तम्भ हमारी बातचीत प्रकाशित होगा। इस स्तम्भ में आपके सुझाव और मन की बात प्रकाशित करेंगे। आप अपने सुझाव, मालवा-निमाड़ से जुड़ी बातें और समसामयिक विषयों पर अपनी बात व्हाट्सएप, ई-मेल या पत्र के माध्यम से भेज सकते है। आप पत्रिका के लिए सुझाव और अपने मौलिक विचार भी लिख कर भेज सकते हैं, जिनकी सहायता से हम जागृत मालवा को और अधिक अपनी बना सकेंगे।

आपके चयनित पत्रों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित भी करेंगे।

व्हाट्सएप - ९९७७७१२५६१
ईमेल - jagrutmalwa@gmail.com
पता -विश्व संवाद केन्द्र, अर्चना, 76 रामबाग, इन्दौर

जनजाति बहन–बेटियों पर पड़ने लगी लव जिहाद की काली परछाई

सोनल दरबार

लव जिहादियों के सॉफ्ट टारगेट पर हमारा जनजाति समाज - सोनल दरबार

जनजाति समाज भारतीय सनातन संस्कृति की आत्मा है। उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पौराणिक परमपराएं भाषा, कला और जीवनशैली में आज भी चिर पुरातन भारत नजर आता है। विभिन्न कालखंडों में कई विदेशी आक्रांताओं ने हमारी संस्कृति, सभ्यता पर गहरा आघात किया। सैकड़ों वर्षों की परतंत्रता के कालखंड में भी जनजाति समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करने में सफल साबित हुआ, लेकिन वर्तमान कालखंड जनजाति समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन कर खड़ा है।

एक ओर चर्च के गुर्गे भोले-भाले जनजाति समाज को अंधविश्वास, प्रलोभन और सुनियोजित षड्यंत्र के तहत हमारी सनातन संस्कृति की जड़ें काटने में लगे हुए हैं तो दूसरी ओर लव जिहाद का दानव हमारी बहन-बेटियों को जिहाद के जाल में फँसाकर धर्मान्तरण के लिए दिन रात षड्यंत्र रच रहा है।

यूं तो जिहाद से पूरा भारत ग्रसित है लेकिन यदि हम मध्यप्रदेश की बात करें तो यहाँ भी आँकड़े चौंकाने वाले हैं। **इंदौर का अशरफ मंसूरी हो या भोपाल का फैजान अब्बास, सागर का फरहान मकरानी हो या इंदौर मोहसिन खान** सभी ने सुनियोजित षड्यंत्र के तहत हिन्दू बहनों को निशाना बनाया। जिहादी मोहसिन ने तो शूटिंग एकेडमी के नाम पर सैंकड़ों हिंदू लड़कियों का शारीरिक शोषण किया।

वर्तमान में सेंट्रल कोतवाली थाना क्षेत्र की घटना हो जिसमें जनजाति समाज की बेटी को ओवैस कुरैशी नामक जिहादी भेड़िए ने अवि बनकर धोखे से अपने जाल में फँसाया। उसने शादी का झांसा देकर युवती के साथ शारीरिक संबंध बनाए और धर्म परिवर्तन का दबाव डाला। जब जनजाति बेटी ने इस्लाम नहीं कबूल किया तो विवाद के बाद उसके साथ मारपीट की गई। आप प्रताड़ना का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि युवती ने तंग आकर तीसरी मंजिल से छलाँग लगा दी। मौत स्वीकार की लेकिन इस्लाम नहीं। तारों के जाल में उलझने से उसकी जान तो बच गई लेकिन इस मामले ने जनजाति समाज के बीच चल रहे इस सुनियोजित षड्यंत्र का पटाक्षेप कर दिया। साथ ही सैंकड़ों सवालों को भी जन्म दिया। उनमें से एक है क्या जनजाति समाज की बेटियां इन जिहादी जाहिलों का अगला सॉफ्ट टारगेट तो नहीं? बीते दिनों पुलिस ने इंदौर के वार्ड नंबर-58 के कांग्रेस पार्षद अनवर कादरी **लव जिहाद फंडिंग** का सनसनीखेज खुलासा किया था। इससे स्पष्ट होता है यह मामला व्यक्तिगत धोखे का नहीं, प्रेम प्रसंग का नहीं, बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र का है। जिसका लक्ष्य है भारत का इस्लामीकरण, **गजवा-ए-हिंद।** मध्यप्रदेश विधानसभा में हाल ही में सामने आए आँकड़ों ने इस मुद्दे की गंभीरता को उजागर किया है। **मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बताया कि जनवरी 2020 से जुलाई 2025 तक राज्य में लव जिहाद के 283 मामले दर्ज किए गए, जिनमें से 71 नाबालिग लड़कियां शामिल थीं। सबसे ज्यादा 74 मामले इंदौर में और 33 मामले भोपाल में दर्ज हुए। इनमें से 197 मामले वर्तमान में कोर्ट में विचाराधीन हैं।** यह आँकड़े दर्शाते हैं कि यह समस्या शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में भी पैर पसार रही है। खासकर मालवा-निमाड़ क्षेत्र, जहां सिमी जैसे आतंकी संगठनों की जड़ें रही हैं वहां मामले अधिक देखे गए हैं। इन आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि लव जिहाद एक संगठित अपराध का रूप ले चुका है, जिसमें न केवल धोखा, बल्कि ब्लैकमेलिंग, दुष्कर्म और जबरन धर्म परिवर्तन जैसे अपराध शामिल हैं। लव जिहाद न केवल एक अक्षम्य अपराध है, बल्कि यह सनातनी संस्कृति और जनजातीय समाज की पहचान पर गहरा आघात है। मध्यप्रदेश सरकार का धर्म स्वातंत्र्य अधिनियम इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है, लेकिन इसके प्रभावी कार्यान्वयन और सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता है। जनजाति क्षेत्रों में दशकों से अपनी सेवा दे रहे **वनवासी कल्याण आश्रम, सेवा भारती, जनजाति मातृ शक्ति संगठन** लगातार विभिन्न माध्यमों से जागरूकता अभियान चला रहे हैं लेकिन अब समय आ गया है जब सम्पूर्ण हिन्दू समाज संगठित हो कर इस अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र के विरुद्ध एक सुर में शंखनाद करे।

समाज को यह समझने की जरूरत है कि प्रेम और विश्वास का दुरुपयोग न केवल व्यक्तिगत, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी बहुत खतरनाक है। समय रहते सख्त कदम उठाना जरूरी है, ताकि सनातनी संस्कृति और जनजातीय समाज की गरिमा को बचाया जा सके।

- हाई कोर्ट अधिवक्ता एवं सामाजिक कार्यकर्ता सोनल दरबार

भारत जैसे राष्ट्र के विनाश का षड्यन्त्र बन रहा है लव जिहाद

मध्यप्रदेश विधानसभा में एक चौंकाने वाली जानकारी सामने आई कि प्रदेश के मालवा-निमाड़ और भिलांचल क्षेत्र में सर्वाधिक हिंदू लड़कियां लव जिहाद का शिकार हुई हैं, जिनमें कई बच्चियाँ तो नाबालिग ही हैं। ये वही क्षेत्र है, जहां सिमी जैसे आतंकी इस्लामिक संगठन ने अपनी जड़ें मजबूत कर ली थीं। इसका आशय साफ है कि मालवा-निमाड़ ओर भिलांचल क्षेत्र में हिंदू संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए लव जिहाद का खेल खेलने के पीछे सिमी और उसके जैसे अन्य आतंकी संगठनों का नेटवर्क हो सकता है। वैसे भी दुनिया भर के आतंकी संगठनों ने भारत के विरुद्ध जिहाद छेड़ा हुआ है, लव जिहाद भी इसका एक रूप होगा और यह पूरे राष्ट्र में चल रहा है।

मध्य प्रदेश में हाल ही में हिंदू युवतियों को नशे (ड्रग्स) की लत लगाकर दुष्कर्म और ब्लैकमेलिंग का मामला भी चर्चा में है। इसी कड़ी में अब एमडी ड्रग्स बेचने वालों का अंतरराष्ट्रीय गिरोह पुलिस के हत्थे चढ़ा है। लव जिहाद के लिए लाखों-करोड़ों की फंडिंग भी यही संकेत दे रही है। इंदौर मध्यप्रदेश का नंबर एक शहर है जहा पर लव जिहाद अब आम बात हो गई है, जबकि मालवा-निमाड़ और भिलांचल के छोटे-छोटे गांव भी अब इसके प्रभाव से मुक्त नहीं लगते हैं। अलग-अलग अंदाजों में प्रभावित लडकियों की संख्या अलग-अलग बताई जाती है किंतु यह संख्या विचार किये जाने वाली संख्या से कहीं अधिक हो चुकी है जो निश्चित ही इस महान राष्ट्र के संविधान और लोकतंत्र के लिए चुनौती बन गयी है। **- डॉ. उत्तम मोहन मीणा, उज्जैन**

यश बनकर नाजिम कर रहा था हिंदू युवतियों को टारगेट

हिंदू संगठन लगातार लव जिहादियों के खिलाफ मुहिम चलाकर उनकी धरपकड़ कर रहा है। जूनी इंदौर थाना क्षेत्र की राजमहल कॉलोनी में रविवार देर शाम बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने मुस्लिम नाम छुपाकर हिंदू नाम रख हिंदू युवतियों को टारगेट करने वाले लव जिहादी को पकड़कर पुलिस के हवाले किया।

बजरंग दल कार्यकर्ताओं के अनुसार **नाजिम खान** निवासी गुलजार कॉलोनी अपना नाम **यश तोमर** बताकर **लव -जिहाद** को अंजाम दे रहा था। नाजिम करीब एक वर्ष से एक युवती के संपर्क में था और उसने अपना नाम बदलकर खुद को एक अन्य धर्म का बताकर पहचान बढ़ाई थी। जब पकड़कर उससे पूछताछ की तो उसने बताया कि वह पहले से शादीशुदा है और दो शादी कर चुका है, जिनकी जानकारी युवती को नहीं दी थी। बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने नाजिम के मोबाइल की जांच की तो हिंदू युवतियों के आपत्तिजनक फोटो और वीडियो मिले, जिनमें से कुछ स्थानीय युवतियों की भी पहचान की जा रही है। आशंका जताई जा रही है कि नाजिम युवतियों को ब्लैकमेल कर रहा था। मोबाइल से मिले अश्लील वीडियो

फिटनेस ट्रेनर बनकर घर बुलाकर देता था निजी ट्रेनिंग - बजरंग दल कार्यकर्ताओं के अनुसार नाजिम एक जिम में फिटनेस ट्रेनर है। वह निजी ट्रेनिंग देने के बहाने युवतियों को घर बुलाता था। इस दौरान वह उनकी निजी जानकारी और वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करता था। मामले में पुलिस ने जांच शुरु कर दी है। इधर, बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने पुलिस से मांग की है कि आरोपी के खिलाफ आईटी एक्ट, धोखाधड़ी, महिला शोषण और धार्मिक पहचान छुपाने जैसी धाराओं में मामला दर्ज कर सेत कार्रवाई की जाए।

सामुहिक वन्देमातरम संस्कार भारती इंदौर महानगर

नवरात्रि में गरबा और डांडिया खेलने की परंपरा सदियों पुरानी है। यह देवी को प्रसन्न करने की पवित्र भावना से मनाया जाने वाला उत्सव है।

अक्टूबर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 02 दशहरा, विजयादशमी
ता. 07 संत सिंगाजी मेला (निमाड़)
ता. 15 डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयंती
ता. 18 घनतेरस, प्रदोष व्रत
ता. 20 दीपावली, केदार गौरी व्रत
ता. 30 अक्षय (आंवला) नवमी

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक राकेश दाँगी फोन नं. 0731-3551341